Nivesh Manthan Magazine, 4 September, 2020

एनएसई पर मिलेंगे भारतीय रिफाइनरों के गोल्ड बार

एक सितंबर 2020 से भारत के स्वर्ण रिफाइनरों के बनाये हुए गोल्ड बार भी एनएसई के मंच पर डिलीवरी के लिए स्वीकार किये जायेंगे। इसके लिए एनएसई कुछ भारतीय रिफाइनरों के नाम स्वीकृत करेगा और उनके बीआईएस मानकों पर खरे उतरने वाले गोल्ड बार उसके मंच पर खरीद-बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे। सर्राफा उद्योग के इतिहास में पहली बार भारतीय रिफाइनर एनएसई के मंच पर अपने गोल्ड बार की डिलीवरी देंगे। एनएसई ने 21 अगस्त को एक वेबिनार के माध्यम से इसके आरंभ की जानकारी दी। प्रस्तुत है इस अवसर पर एनएसई के एमडी एवं सीईओ विक्रम लिमये की ओर से दिया गया वक्तव्य।

हम एनएसई द्वारा स्वीकृत रिफाइनर्स गोल्ड बार की खरीद-बिक्री का आरंभ कर रहे हैं, जो 1 सितंबर 2020 से लागू बीआईएस मानकों पर खरे उतरते हैं। यह एनएसई के लिए सौभाग्य की बात है कि इस आरंभ से हम इंडिया गुड डिलिवरी स्टैंडर्ड का संचालन और उसका व्यावसायीकरण करने वाले पहले एक्सचेंज बन गये हैं।

रिफाइंड गोल्ड बार की शुद्धता, खरीद, स्थान और मूल स्रोत की पहचान करने के सबसे महत्वपूर्ण मानदंडों में से एक है उसके उत्पादन के मानकों को निश्चित करना। गुणवत्ता मानक हमारी अर्थव्यवस्था और 1986 में स्थापित बीआईएस की आधारशिला रहे हैं।

इससे पहले जब 1946 में आईएसआई अस्तित्व में आया था, तब से ही गुणवत्ता मानक और राष्ट्रीय मानक स्थापित करना इसका उद्देश्य रहा है। ऐसे कई अच्छे डिलीवरी मानक हैं, जो अपने संबंधित स्थानों, जैसे लंदन गुड डिलीवरी, दुबई गुड डिलीवरी, टर्किश स्टैंडर्ड्स आदि से ही पहचाने जाते हैं।

तमाम स्थानों पर स्वर्ण मानक (गोल्ड स्टैण्डर्ड) ही एक्सचेंजों पर या ओटीसी बाजारों में 'अच्छी डिलीवरी' का केंद्र बिंदु हैं। अमानकीकृत सोने (नॉन-स्टैंडरडाइज्ड गोल्ड) की तुलना में मानकीकृत सोने (स्टैंडरडाइज्ड गोल्ड) का मूल्यांकन अलग होता है, भले ही दोनों तरह का सोना समान माप, वजन और शुद्धता का हो।

जो रिफाइनर मानकीकृत सोने से पहचाने जाते हैं, वे ही मानकीकृत गोल्ड बार बनाने वाले रिफाइनरों की बाजार में प्रतिष्ठा पता करने में मदद करते हैं। किसी भी स्थान या देश के लिए एक अच्छे डिलीवरी मानक के विकास का मतलब है कि वहाँ अधिक संगठित व्यापार, औपचारिकता और मान्यता है, और उस देश में रिफाइनर विश्व स्तर के ऐसे सर्राफा बार का उत्पादन करने में सक्षम हैं जो सर्राफा बाजार और आभूषण श्रेणी में कार्यरत एक बड़े व्यावसायिक समुदाय को स्वीकार्य है।

भारत रिफाइंड गोल्ड का उपभोक्ता केंद्र रहा है। हालाँकि, ऐसे बार का उत्पादन स्विट्जरलैंड, दुबई, तुर्की या दक्षिण अफ्रीका में होता रहा है। गोल्ड बार के संदर्भ में हम मुख्यतः आयातक ही रहे हैं और कुछ सालों पहले तक भी हमारी रिफाइनिंग क्षमता नगण्य थी।

हालाँकि, पिछले कुछ सालों में भारत में रिफाइनरों की प्रगति इतनी अच्छी रही कि उसने भारतीय रिफाइनिंग क्षमता के पूरे परिदृश्य को ही बदल दिया।

फिर भी, रिफाइनिंग प्रक्रिया में डिलीवरी के लिए गोल्ड स्टैण्डर्ड जैसी सबसे सबसे महत्वपूर्ण बात हमारे पास नहीं थी। यह सुधार इसलिए भी आवश्यक था, ताकि हम दुनिया को यह बता सकें कि भारतीय में रिफाइनिंग की क्षमता है और वह प्रतिस्पर्धा में भी है।

डिलीवरी के लिए गोल्ड स्टैंडर्ड का विकास न सिर्फ रिफाइनरों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि जिस इकोसिस्टम में भारतीय सर्राफा और आभूषण व्यवसाय काम करता है, उसके लिए भी बहुत जरूरी है। अब तक भारतीय एक्सचेंज दूसरे स्थानों में बने गोल्ड बार को ही स्वीकार करते थे। अब यह बताते हुए हमें खुशी हो रही है कि बदलाव हो चुका है, जिसके लिए हम बीआईएस के बहुत आभारी हैं।

हम उम्मीद करते हैं कि एनएसई का यह कदम, जो हमारे प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य से भी मेल खाता है, आगे जा कर बाजार के हर प्रतिभागी के लिए उत्प्रेरक साबित होगा। हमें यह भी आशा है कि बाज़ार के दूसरे प्रतिभागी जैसे बैंक या नामांकित एजेंसियाँ जो सर्राफा आयात में मुख्य भूमिका अदा करती हैं, आगे चल कर एक्सचेंज पर भी प्रतिभागी होंगी।

हम उम्मीद करते हैं कि बैंकों को एक्सचेंज में भाग लेने की अनुमति दी जायेगी, जिसमें वे गोल्ड मॉनेटाइजेशन स्कीम के तहत जुटाये गए स्क्रैप/गहनों के शोधन को एकीकृत करेंगे। एनएसई एक्सचेंज प्लेटफॉर्म पर इंडियन गुड डिलीवरी स्टैण्डर्ड बार लेने और डिलीवर करने के लिए बैंकों को एनेब्लेर भी दिये जाने चाहिए।

अपनी बात को विराम देते हुए मैं यह कहना चाहूँगा कि यह एक अभूतपूर्व बदलाव है, जिससे कई विश्व-स्तारीय रिफाइनर भारतीय सर्राफा इकोसिस्टम की ओर आकर्षित होंगे। वे दुनिया की इस सबसे बड़ी स्वर्ण उपभोक्ता अर्थव्यवस्था, यानी कि भारत में रिफाइनिंग उत्पादन भी करना चाहेंगे। ■